③ ∞ + 5 = 5

पृष्ठ 3 के अंक | कुल अंक

उत्तर = 01

"बीजक" कबीरदास जी की रचनाएँ संकलित हैं।

उत्तर = 02

छायावाद के आधार स्तम्भ कहे जाने वाले कवियो के नाम निम्नलिखित है —

01. जयशंकर प्रसाद
02. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
02. रामधारीसिंह "दिनकर"

उत्तर = 03

"यदि गद्य कवियो की कसौटी है, तो निबन्ध गद्य की कसौटी है" यह कथन "आचार्य रामचन्द्र शुक्ल" का है।

उत्तर = 04.

विभावना तथा विशेषोक्ति अलंकारो में निम्न अन्तर है —

विभावना	विशेषोक्ति
जहाँ कारण के न होने	जहाँ कारण के होने पर

पर भी कार्य का होना बताया जाता है वहाँ विभावना अलंकार होता है	भी कार्य नहीं होता है वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होता है।
उदा० — बिनु पद चलै सुने बिन काना कर बिनु करम करै विधि नाना।	उदा० — जल बिच मीन प्यासी।
स्पष्टीकरण — यहाँ बिना पैरों के चलना बिना के सुनना तथा बिना हाथों से विभिन्न प्रकार के कार्य करना अर्थात यहाँ कारण न होते हुए भी कार्य का होना बताया गया है। यहाँ विभावना अलंकार है।	स्पष्टीकरण — यहाँ जल कारण के होते हुए भी प्यास बुझने का काम नहीं होता है। अतः यहाँ विशेषोक्ति अलंकार है।

BSEMP

2

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर = 05.

[ब] आँखों के अंधे नाम नैन सुख — जैसा नाम हो वैसा काम न होना।

(5) 6 + 4 10

प्रयोग — उसका नाम तो अमीरचन्द है परन्तु वह भिख माँगकर अपना पेट भरता है अत: यह सत्य ही हुआ की आँखों के अन्धे और नाम नयन नैन सुख।

उत्तर = 06.

लोकगीत — लोक भाषा बोली में लोगों के द्वारा गाये जाने वाले गीत लोक गीत कहलाते है लोकगीतों के विषय विवाह, जन्मोत्सव, होली आदि होते है।

उत्तर = 07.

दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले दो ऐतिहासिक धारावाहिकों के नाम निम्न है —

01. टीपू सुल्तान.
02. अकबर दी ग्रेट
03. चन्द्रकान्ता

B S E M P

4

के अंकों का योग

2

उत्तर = 08.

[अ] चिल्लाने में कोई फायदा नहीं होगा।

6 | 10 | + | 3 | = | 13

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 6 के अंक | कुल अंक

शुद्ध वाक्य — चिल्लाने से कोई फायदा नहीं होगा।

(ब) आग फिर आग होता है।
शुद्ध वाक्य — आग फिर अंगार होता है।

उत्तर = 09.

छप्पय छन्द — यह छन्द रोला तथा उल्लाला से मिलकर बनता है इसमें छः चरण होते हैं प्रथम चार चरण रोला के तथा अन्तिम दो चरण उल्लाला के होते हैं। प्रथम चार चरणों में 11-13 पर यति देकर 24 मात्रायें होती हैं तथा अन्तिम दो चरणों में 15-13 पर यति देकर 28 मात्रायें होती हैं। इसे संयुक्त छन्द भी कहते हैं।

रोला + उल्लाला = छप्पय

उदाहरण

(11) (13)

SS I I I I S I I I I I S I I S
नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुन्दर है।

7

7 | 13 + 5 = 18

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 7 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

सूर्य चन्द्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है।
नदियाँ प्रेम प्रवाह फूल तारे मंडन है।
बन्दी जन खग वृन्द शेष फन सिंहासन है।
करते अभिषेक पयोद है बलिहारी इस देश की।
हे मातृभूमि ! तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की।

उत्तर = 10.

रस की परिभाषा

कहानी, कविता, उपन्यास आदि को पढ़ते सुनते तथा देखते समय पाठक, श्रोता तथा दर्शक को जिस आनन्द की प्राप्ति होती है उसे रस कहते है।

रस के अंगो के नाम निम्न है —

01. स्थायीभाव
02. विभाव
03. अनुभाव

5

अंकों का योग

18 + 6 = 24

उत्तर = 11

मध्य प्रदेश में बोली जाने वाली प्रमुख 4 बोलिया निम्न है —

01. भीली, 02. बुन्देली, 03. मालवी, 04. निमाड़ी।

3

उत्तर = 12.

"एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न" में तात्कालीन सामाजिक प्रवृत्तियों की स्पष्ट शब्दों में आलोचना की है आज शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के लिए बहुत सी नीतियाँ अपनाई जाती है परन्तु भ्रष्टाचार उन नीतियों के मार्ग में रोड़ा अटकाता है। पाठशाला तथा अन्यधार्मिक कार्यो के लिए चन्दा इकट्ठा करने वाले उस धन के उपयोग से आने वाली तीन पीड़ियों तक की भलाई करते है। प्रवेश नियमों में गड़बड़ी, अनेक उपाधियों से विभूषित अध्यापक गण अध्ययन के क में रुचि नहीं लेते है, इस प्रकार अनेक सामाजिक प्रवृत्तियों की स्पष्ट शब्दों

6

3

9

26	+	3	=	29
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 9 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

में आलोचना की है।

उत्तर = 13.

"चीनी फेरीवाला" पाठ संस्मरण की अपेक्षा रेखाचित्र के अधिक निकट है इसलिए वह रेखाचित्र के अन्तर्गत आता है।

रेखाचित्र —

रेखाचित्र शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी के स्केच शब्द से हुई है यह ~~रेखाचित्र~~ रेखा तथा चित्र दो शब्दों के योग से बना है। इसमें लेखक शब्द की कलात्मक रेखाओं के द्वारा किसी वस्तु या पात्र की बाह्य तथा आन्तरिक स्वरूप को इस प्रकार प्रस्तुत करता है मानो पाठक के हृदय के ~~x~~ में उसकी सजीव तथा ~~यथार्थ~~ मूर्ति अंकित हो जाती है। और "चीनी फेरीवाला" भी एक रेखाचित्र है।

3

अंकों का योग

उत्तर = 14

भारतेन्दु युगीन निबन्धों की विशेषताएँ निम्न है —

01. भारतेन्दु युग में देश प्रेम तथा

राष्ट्रीयता की भावना पर निबन्धों की रचना की गई।
02. देश-प्रेम तथा समाज-सुधार की समस्याओं पर बल दिया गया।
03. भाषा में स्थानीय बोली का प्रभाव था।
04. यह निबन्ध ज्ञान-वर्धक तथा रसानुभूति कराने वाले थे।

निबन्धकार	रचनाएँ
01. भारतेन्दु हरिशचन्द्र	अद्भुत अपूर्व स्वप्न, भारत दुर्दशा।
02. पण्डित बाल कृष्ण भट्ट	मेला-ठेला, बात-चीत
03. प्रतापनारायण मिश्र	सोने का डंडा, बुढ़ापा, दाँत।

BSEMP

उत्तर = 15

कहानी के तत्व निम्न है —

01. देश काल या वातावरण
02. कथोपकथन या संवाद
03. कथानक या कथावस्तु

04. पात्र या चरित्र चित्रण
05. भाषा शैली
06. उद्देश्य

उद्देश्य —

कहानी में उद्देश्य महत्वपूर्ण स्थान होता है कहानी का अपना भी विशिष्ट उद्देश्य होता है। कहानी उद्देश्य प्रधान होती है।

3

ख उत्तर = 16.

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में रामप्रसाद बिस्मिल का महत्त्वपूर्ण योगदान था —

~~01.~~ राष्ट्रीय आन्दोलन को गतिशील बनाने के लिए

01. क्रान्तीकारी आन्दोलन को गतिशील बनाने के लिए धन एकत्र करने के लिए काकोरी नामक स्थान पर सरकारी खजाने को लुटने की योजना बनाई गई तब इन्हें ही नायक चुना गया।

02. बिस्मिल जी हिन्दू - मुस्लिम एकता में विश्वास करते थे। उन्होंने अशफाक उल्ला खाँ को अपने ही दल में क्रान्तिकारी बनने

(12) 33 + 3 = 36
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 12 के अंक | कुल अंक

की शिक्षा दी।
03 फाँसी की सजा प्राप्त कर उन्होंने अपने बलिदान द्वारा देशवासियों में देश की रक्षा की लड़ाई की प्रेरणा जगाई। इनका अन्तिम सन्देश था —
"मरते बिस्मिल रोशन लाहिड़ी असफाक अत्याचार से।
होंगे पैदा सैकड़ो इनके रुधिर की धार से।।

उत्तर - 17

गद्य की प्रमुख विधायें निम्न लिखित है —

01. निबन्ध
02. नाटक
03. कहानी

01. निबन्ध

निबन्ध अंग्रेजी के "ऐसे" शब्द हिन्दी रूपान्तरण है नि: + बन्ध = निबन्ध इस प्रकार बन्ध युक्त रचना निबन्ध कहलाती है। यह अच्छे प्रकार से बन्धी हुई परिमार्जित तथा प्रौढ़ रचना है।

BSEMP

3
पृष्ठ के अंकों का योग

36 + 3 = 39

02. नाटक —

नाटक शब्द नट धातु से बना है नट का अर्थ है शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं का परिचालन है यह दृश्य काव्य का भेद है।

नाटक शब्द अंग्रेजी के "ड्रामा" शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है हिन्दी को उत्तराधिकारी के रूप में अनेक वस्तुए संस्कृत से प्राप्त हुई है जिनमें नाटक भी एक है।

03. कहानी —

कहानी अंग्रेजी के "स्टोरी" शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। यह गद्य की सबसे प्राचीन तथा लोकप्रिय विधा है। संचार माध्यमों की सुविधा तथा मानव जीवन की व्यस्तता के कारण यह और अधिक लोकप्रिय विधा बन गई है।

3

उत्तर :- 18.

"तीन सयाने" पाठ में कला, धर्म तथा विज्ञान तीन सयाने है इन सयानो के द्वारा ही देश का उद्धार हो सकता है. किन्तु राजनीति इन सयानो पर हावी होकर सामाजिक बुराइयों को जन्म देती है

सामाजिक बुराइयों के लिए राजनीति जिम्मेवार है। वह कला धर्म और विज्ञान इन सभी का गलत ढंग से इस्तेमाल करती है फलत! सामाजिक बुराइयां धार्मिक द्वेष तथा विज्ञान सम्बन्धी विकृतियां फैलती है। वह अपनी स्वार्थ सिद्धि के धार्मिक उन्माद पैदा करती है तथा विज्ञान के द्वारा भयंकर अस्त्र शस्त्रों का निर्माण करती है परन्तु आज की राजनीति समाज की अच्छाइयों के लिए प्रयोग में लाई जाती है क्योंकि इसके पास सत्ता रहती है वह सब कुछ कर सकती है।

उत्तर = 19.

सिंह मित्र की कन्या मधुलिका के मन में देश के प्रति बहुत भक्ति तथा श्रद्धा है। वह राजा के द्वारा कृषि उत्सव पर भूमि का चयन करने पर वह कोई आपत्ति नहीं करती है। भूमि का कोई मूल्य न लेकर अपना सक्रिय योगदान देती है। जब वह मगध के राजकुमार अरुण के प्रेम में बंधकर वह राजा से वह दुर्ग के पास की भूमि मांगती है

(15) 42 + 4 = 46
योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 15 के अंक — कुल अंक

मध्यप्रदेश

तो अरुण ~~अ~~ इधर से आक्रमण की योजना बनाता है इस बार देश प्रेम मधुलिका के लिए कर्तव्य का रूप होता है दूसरी ओर वह अरुण से प्रेम करती है तथा उसके कार्यों में सहयोग देती है परन्तु वह देश प्रेम को स्वार्थ से अधिक मानती है वह अरुण के आक्रमण को विफल कर देती है अरुण को फांसी की सजा दी जाती है तथा मधुलिका को पुरस्कार ग्रहण करने के लिए कहा जाता है तो वह पुरस्कार के रूप प्राणदण्ड मांगने की याचना करती है। इसप्रकार वह कर्तव्य की बलिवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर देती है। इस प्रकार वह देश प्रेम तथा व्यक्तिगत प्रेम दोनों की विरोधी भावनाओं को में पिसकर अपने कर्तव्य मे सफल होती है पहले वह देश प्रेम में खरी उतरने के बाद व्यक्तिगत प्रेम को सार्थक ~~है~~ करती है। इस प्रकार कहा जा सकता है ~~के~~ कि प्रेम और कर्तव्य का संघर्ष वास्तव में प्रेम ही है।

4

4
के अंकों का योग

~~ब~~ उत्तर = 20.

प्रगतिवादी कविता की विशेषताएँ निम्न हैं —

01. प्रगतिवादी कविता में यथार्थवादी चित्रण

16 | 48 + 4 = 50
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 16 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

में बौद्धिक भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता की प्रधानता है।
02. प्रगतिवादी काव्य में रूढ़ियों एवं बंधनों का विरोध तथा उनके उन्मूलन का प्रयास है।
03. इस काव्य में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के प्रति विद्रोह तथा असन्तोष का स्वर है।
04. प्रगतिवादी कवियों का मूल स्वर बौद्धिकता इसमें भावुकता का अभाव है।
05. इस काव्य की भाषा सरल सुबोध तथा अलंकार भाव से युक्त है।
06. इस उद्देश्य प्रधान प्रगतिवादी काव्य में शोषितों के प्रति गहरी सहानुभूति है।

कवि	रचनाएँ
01. सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"	नये पत्ते, गीतिका, तुलसीदास
02. रामधारी सिंह दिनकर	रेणुका।
03. नागार्जुन	भस्मासुर, युगधारा, सतरंगा।

B S E M P

4
पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर - 22

"केशव कहि न जाइ का कहिए" पद में कवि ने संसार की विचित्रता का वर्णन किया है। यह संसार रूपी चित्र शून्य रूपी दिवार पर अंकित है। इस चित्र का चित्रकार कही दिखाई नहीं देता है सामान्य चित्र धोने पर मिट जाता है यह धोने से भी नही मिटता। इस संसार रूपी सागर में भ्रमर रूपी काल निवास करता है जो दिखाई नही देता वह चर अचर सभी को ग्रस लेता है इस संसार को कुछ लोग सत्य मानते है तथा कुछ लोग असत्य तथा कुछ सत्य और असत्य दोनो मानते है तुलसीदास जी कहते जो व्यक्ति इन तीनो भ्रमो को छोड़ देता है वही सच्चे परमात्मा को पहचान सकता है।

3½

उत्तर - 23.

"सहयोग, श्रम, शांति" कविता में कवि ने बताया है कि वर्तमान में मनुष्य भाग्य वादी बन गया है वह परिश्रम करना पसन्द नहीं करता है। तथा

B S E M P
पृष्ठ के अंकों का योग: 3½

समाज में जो भी सुख-सुविधाये है उनका समान रूप से बटवारा नही होती है। उन सुख सुविधाओ पर व्यक्ति विशेष का प्रभुत्व रहता तथा आर्थिक अन्याय वर्गभेद आदि समस्याएँ समाज मे व्याप्त है।

उत्तर 24

"जयशंकर प्रसाद"

[अ] रचनाएँ —

01. पुरस्कार
02. कामायनी
03. झरना
04. आँसू
05. लहर आदि।

[ब] भावपक्ष —

प्रसाद जी छायावाद के आधार स्तम्भ माने जाते है। उनका काव्य छायावाद की समस्त भाव रश्मियो का कलात्मक सौन्दर्य से पूर्ण है। उनकी कविताओ में सौन्दर्य, प्रेम

BSEMP

3

पृष्ठ के अंकों का योग

तथा करुणा के त्रिवेणी है। प्रसाद जी आधुनिक शैव थे। उनका काव्य आनन्द भाव तथा राष्ट्रभाव से ओतप्रोत है। उनकी कविताओं में भारतीय अतित की गौरवपूर्ण झाँकी मिलती है।

[स] कलापक्ष —

प्रसाद जी की भाषा सरल सुबोध सुबोध तथा प्रवाहपूर्ण है। संस्कृत शब्द अधिक होने पर भी वह कठिन नहीं है विषय के अनुसार सरल तथा गम्भीर है। परम्परागत अलंकारो के साथ नवीन अलंकारो का भी उपयोग किया है।

5

उत्तर = 25

"बाबू गुलाबराय"

5

[अ] रचनाएँ —

01. मेरी असफलताएँ
02. जीवन और जगत
03. ठलुआ क्लब
04. प्रबन्ध प्रभाकर
05 मन की बात आदि।

(20) 61 + 5 = 65
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 20 के अंक | कुल अंक

B S E M P

(ब) भाषाशैली —

गुलाबराय जी की भाषा विशुद्ध खड़ी बोली है। संस्कृत तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है इनकी भाषा सरल सुबोध तथा प्रवाह है उनकी दो प्रकार की भाषायें दिखती है साहित्यीक तथा सामाजिक। दोनों में संस्कृत के तत्सम शब्दो का बाहु रहा है। इनका शब्द चयन विषय तथा भावो के अनुकुल है। इनकी शैली आल आलोचनात्मक, भावात्मक, विवेचनात्मक है।

(स) साहित्य में योगदान —

बाबू गुलाबराय का साहित्य मे महत्वपूर्ण योगदान है। वह प्रारम्भिक आलोचक तथा निबन्धकार के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

5

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर = 26

सम्भवत: माँ — — — — — — — — रहता है

संदर्भ — प्रस्तुत गद्यांश "महादेवी वर्मा द्वारा रचित "चीनीफेरीवाला" स

(21) 65 + 4 = 69

योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 21 के अंक — कुल अंक

BSEMP

लिया गया है।

प्रसंग — प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका ने माँ के प्रति मनुष्य का स्नेह बताया है।

व्याख्या — संसार में माँ ही ऐसी होती है जिसे न देखने पर भी मनुष्य के मन में उसके प्रति श्रद्धा रहती है। माँ न होने पर मनुष्य को ऐसा लगता है वह अपनी माँ मिला तथा वह उसके विषय में सबकुछ जानता है। यह स्वभाविक भी है। मनुष्य को संसार से बाँधने वा विधाता माँ ही है। माँ को मानकर संसार को न मानना स्वभाविक है। परन्तु माँ को न मानकर संसार को मानना असम्भव है कोई भी पुरुष व्यक्ति अपनी माँ अपेक्षा नहीं कर सकता है। यह महादेवी जी का आशय है।

4

पृष्ठ के अंकों का योग 4

उत्तर - 27

तंत्री नाद — — — — — — — — — — बुड़े सब अंग

संदर्भ — प्रस्तुत पद्यांश रीतिकालीन कवि

(22) 69 + 6 = 75

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 22 के अंक | कुल अंक

बिहारी द्वारा रचित "बिहारी सतसई" से लिया गया है।

प्रसंग — प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने संगीत के साधनों का महत्व बताया है।

व्याख्या — कवि कहते हैं कि जो तंत्री नाद काव्य के आनन्द सरस राग में यदि आधा डूबा है तो वह डूब गया अर्थात नष्ट हो गया। परन्तु जो व्यक्ति इनमें पूरा डूब जाता है उसका जीवन सफल हो जाता है। वह सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त कर लेता है।

BSEMP

उत्तर - 28

[अ] उत्तर — सच्चा मित्र।

6

[ब] उत्तर — मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उससे परिचित तो बहुत होते हैं परन्तु मित्र बहुत कम बन पाते हैं सच्चा मित्र माता तथा गुरु है।

पृष्ठ के अंकों का योग

(23) 75 + 4½ = 79½

उत्तर = 29

प्रति,

श्री मान नगरपालिका अधिकारी महोदय,
नगर मण्डलेश्वर,

विषय — शहर की सफाई के सम्बन्ध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहती हूँ कि हमारे नगर में बहुत अधिक गन्दगी फैल गई है। इसकी नियमित सफाई करना आवश्यक है। इस गन्दगी के कारण शहर में अनेक बिमारियाँ फैल रही है। गटरो में बहुत अधिक गन्दगी भरी पड़ी है। उसकी सफाई करवाना जरूरी है तथा नियमित सफाई करवाई जानी चाहिए।

अतः श्रीमान जी से निवेदन है कि वह हमारे नगर की सफाई की ओर ध्यान दें।

धन्यवाद

4½

दिनांक
13/03/2007

भवदीय
रोल नं 275419343
समस्त ग्राम वासी

उत्तर = 30

[ब] साहित्य और समाज

रूपरेखा ⟹

01. प्रस्तावना
02. साहित्य तथा समाज का सम्बन्ध
03. समाज पर साहित्य का प्रभाव
04. साहित्य पर समाज का प्रभाव
05. उपसंहार ।

01. प्रस्तावना ⟹ जिस प्रकार सूर्य की किरणों के प्रकाश से पृथ्वी पर अन्धकार दूर होता है वैसे साहित्य के आलोक से समाज में नवीन चेतना का संचार होता है साहित्य तथा समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

" आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने समाज को साहित्य का दर्पण कहा है। वर्सफील्ड महोदय साहित्य को मानवता का मस्तिष्क बताते है " ।

BSEMP

0

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

केन्द्र की सील C.No. 54029

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 13/3/07

केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

केन्द्र क्रमांक

परीक्षा का नाम

विषय हिन्दी (विशिष्ट) माध्यम हिन्दी

दिनांक 13/03/2007

पृष्ठ 792-40-796

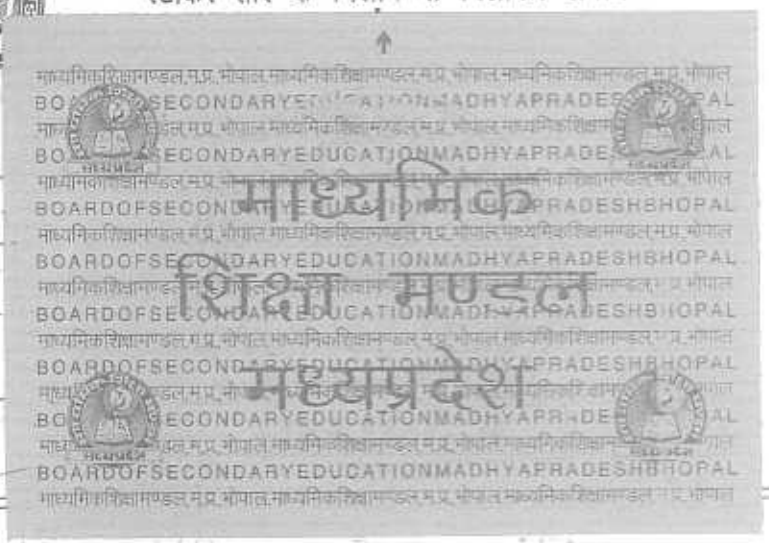

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

B S E M P

के अंकों का योग

Q2. साहीत्य तथा समाज सम्बन्ध ⟹ साहित्य तथा समाज का घनिष्ट सम्बन्ध है। दोनो पर एक दुसरे का प्रभाव पड़ता है इसलिए महापुरुषो ने साहित्य को समाज का दर्पण, साहित्य को समाज का दीपक तथा साहित्य को मानवता का मस्तिष्क है। विश्व के महान विद्वानो ने समाज मे होने वाले परिवर्तन आदि को अपने साहित्य मे समाहित किया है। साहीत्य तथा समाज दोनो का अटूट सम्बन्ध है। साहित्य के बिना समाज की कल्पना नही कि जा सकती तो समाज के बिना साहित्य की बिल्कुल भी कल्पना नही की जा सकती है। दोनो एक दुसरे से प्रभावित है।

Q3. समाज पर साहित्य का प्रभाव ⟹

समाज पर साहित्य का बहुत प्रभाव पड़ता है। साहित्य के द्वारा ही मनुष्य को पुरातन शैली के बारे में ज्ञात होता है। अन्यथा वह साहित्य के अभाव में पुरातन जीवन शैली से अंजान रहता तथा उसे अपने पूर्वजों के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं हो पाता। साहित्यकार त्रिकालदर्शी होता है। वह समाज में होने वाली बुराइयों, मान्यताओं, विचारधाराओं सभी को अपने काव्य में समाहित करता है। तथा अपने साहित्य की रचना करता है। वह भी समाज का ही प्राणी है। वह भी इन सामाजिक प्रभावों से अछूता नहीं रह सकता है। वह समाज में जो कुछ देखता, सुनता तथा अनुभव करता है। उसे अपनी रचना में स्थान देता है।

Q4. साहित्य पर समाज का प्रभाव ⟹

बिना समाज के साहित्य की कल्पना नहीं की जा सकती एक अच्छे समाज का साहित्य की रचना तभी होती है जब समाज होता है। पूरा साहित्य समाज पर आधारित

79 + 89 = 88
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 3 के अंक | कुल अंक

होता है। समाज मे होने वाली भ्रष्टाचार, अत्याचार, शोषण, दहेज-प्रथा, बाल-विवाह आदि का साहित्य मे समावेश किया गया है। तथा इन अत्याचारो के विरुद्ध साहित्यकार रचना करके उन्हे दूर करता है समाज को वर्ग-वैमनस्यता से मुक्त करता है। इस प्रकार साहित्य पर भी समाज का बहुत प्रभाव पड़ता है। साहित्य समाज से प्रभावित होता है। समाज ही साहित्य का निर्माता है। समाज के बिना सच्चे तथा अच्छे ~~प्रस्तावना~~, साहित्य की कल्पना करना असम्भव

~~06. अपसंह~~

06. उपसंहार

समाज तथा साहित्य दोनो का अटूट सम्बन्ध है। साहित्य ही समाज का कल्याण कर सकता है। जिस ~~प्रकार~~ प्रकार हम ~~हम~~ अपने चेहरे को दर्पण मे देखते है इसी प्रकार साहित्य भी समाज का दर्पण है। यदि साहित्य पाखण्ड, बर्बर तथा अत्याचारी रचनाओ से पूर्ण होगा तो समाज भी साहित्य से वही प्रेरणाये ग्रहण करेगा तथा वह भी पाखण्ड हो जायेगा।

BSEMP

89
पृष्ठ के अंको का योग

8/2

पृष्ठ 28

88 + 00 = 88

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

88/100

B
S
E
M

अंकों का योग